जहीरुद्दीन मुहम्मद बाबर (1526 ई.1530 ई.)

- जन्म – **14** फरवरी, **1483** ई. को फरगना में
- मृत्य – **26** दिसम्बर, **1530** ई. को आगरा में
- माता – कुतुलुग निगार खाँ (ये मंगोल वंशज थी) **14**वाँ वंशज (बाबर)
- पिता – उमरशेख मिर्जा (ये तैमुर वंशज थे) **5**वाँ वंशज (बाबर)

- पत्नी – माहम बेगम, दिलदार बेगम, गुलरुख बेगम, मौसमा सुल्तान बेगम, आयेशा सुल्तान बेगम
- पुत्र – हुमायूँ, कामरान, अस्करी और हिंदाल
- पुत्री – गुलबदन बेगम, गुलरंग बेगम, गुलचेहरा बेगम, फक्र-उन-निस्सा
- दादी – उसनदौला बेगम (दौलत बेगम)
- दादा – मीरान शाह

- उत्तराधिकारी – हुमायूँ
- आध्यात्मिक गुरु – उबैदुल्लाह अहरार
- सेनापति – मीरबकी, मेहंदी हसन
- बजीर – मेहंदी ख्वाजा
- मकबरा – काबुल

➢ बाबर मुगल वंश का संस्थापक था। मुगल का अर्थ बहादुर होता है। तुर्की भषा में बाबर का अर्थ 'बाघ' होता है। बाबर तुर्क और मंगोल दोनों के रक्त का मिश्रण था। बाबर का पैतृक राज्य फरगना था। बाबर ने जिस नवीन वंश की नीव डाली, वह तुर्की नस्ल का 'चगताई' वंश था। जिसका नाम चंगेज खाँ के द्वितीय पुत्र के नाम पर पड़ा, लेकिन आमतौर पर उसे 'मुगल वंश' कहा गया है।

- बाबर पिता की मृत्यु के बाद **11** वर्ष की आयु में **1494** ई. में फरगना की गद्दी पर बैठा। बाबर ने **1501** ई. में समरकंद पर अधिकार कर लिया।
- **1501-2** में सर-ए-पुल के युद्ध में शैवानी खां ने बाबर को हरा दिया और समरकन्द पर कब्जा कर लिया।
- **1504** ई. में बाबर ने काबुल पर अधिकार कर लिया।
- बाबर ने **1507** ई में 'पादशाह' (बादशाह) की उपाधि धारण की। पादशाह की उपाधि धारण करने से पहले बाबर 'मिर्जा- की पैतृक उपाधि धारण करता था।

- बाबर ने अपनी आत्मकथा 'तुजुक-ए-बाबरी' (बाबरनामा) तुर्की भाषा में लिखी। बाबरनामा का फारसी में अनुवाद अब्दुल रहीम खानखाना ने किया। बाबरनामा का अंग्रेजी भाषा में अनुवाद श्रीमती बेबरिज ने किया।
- बाबरनामा में बाबर ने राणा सांगा तथा कृष्ण देव राय की चर्चा की है। बाबर ने लिखा है हिन्दुस्तान का सबसे शक्तिशाली शासक कृष्णदेव राय था।
- बाबरनामा में 5 मुस्लिम राज्यों की चर्चा है- बंगाल, दिल्ली, मालवा, गुजरात, बहमनी।

बाबरनामा में 5 मुस्लिम राज्यों की चर्चा की गई है, जिनके शासक निम्न हैं-

मालवा - महमूद खिलजी द्वितीय

गुजरात - मुजफ्फर शाह द्वितीय

दिल्ली - इब्राहिम लोदी

बंगाल - नूसरत शाह

बहमनी - काजी मुल्लाशाह

- बाबरनामा में 2 हिन्दु राज्यों की चर्चा है- विजयनगर और मेवाड़
- बाबर ने लिखा है कि "भारतीय मरना जानते हैं, लड़ना नहीं।"
- बाबरनामा में भारत को धनी राष्ट्र, गंगा नदी, फलों का राजा आम, मैदान शब्द, कारीगरों को राष्ट्र तथा फारस की चित्रकार बिहजाद का नाम मिलता है।
- सड़क मापने के लिए बाबर ने 'गज-ए-बाबरी' पैमाना चलाया।

- बाबर ने दीवान नाम से तुर्की भाषा में कविताओं का संग्रह करवाया।
- भारत में गुलाब की खेती बाबर लाया।
- बाबर अपने साथ दो महत्वपूर्ण खेल भारत लाया। पहला, गंजीफा ये ताश के पत्तों का खेल होता था। दूसरा, इश्कबाजी ये कबूतरों का खेल था। बाबर का प्रिय खेल इश्कबाजी था।
- बाबर ने एक नए तरह के छन्द मुबइयान का सृजन किया।
- बाबर ने अलंकार शास्त्र पर 'रिसाल-ए-उसज' नामक पुस्तक लिखी और 'खत-ए-बाबरी' नाम से एक नई शैली प्रारंभ की।
- बाबर ने पहली बार युद्ध में तोपखानों को प्रयोग किया।

- बाबर को दो बार दफनाया गया। पहले आगरा में, फिर काबुल में। बाबर का प्रिय शहर काबुल था। उसकी इच्छा थी कि उसे काबुल में दफनाया जाए।
- बाबर को बाग बगीचों का शौक था। बाबर ने कश्मीर में निशात बाग, लाहौर में शालीमार बाग , हरियाणा में पिंजौर बाग और आगरा में ज्यामितीय विधि से नूर-ए-अफगान (नूरे अफगान) बाग बनवाया। जिसे आरामबाग भी कहा जाता है।
- उदारता के कारण बाबर को कलन्दर कहा गया।

- खानवा के युद्ध को जीतने के बाद उसने गाजी (काफिरों को मारने वाला) की उपाधि धारण की।
- बाबर ने काबुल में शाहरुख नामक चांदी का सिक्का चलाया। बाबर ने कंधार में बाबरी नाम चांदी का सिक्का चलाया। बाबर के चांदी के सिक्कों पर एक तरफ कलमा और चारों खलीफाओं का नाम तथा दूसरी ओर बाबर का नाम और उपाधि अंकित होती थी।
- चारों खलीफाओं के नाम- अबुबक्र, उमर, उस्मान, अली।
- बाबर ने पानीपत में काबुली बाग में मस्जिद बनवाई। बाबर ने संभल में जामा मस्जिद बनावाई। बाबर ने आगरा में लोदी किले के अंदर आगरा मस्जिद बनवाई।
- बाबर के सेनापति मीरबकी ने आयोध्या में बाबरी मस्जिद बनवाई।

- बाबर युद्ध में तुगलमा युद्ध पद्धति का प्रयोग करता था। यह पद्धति उसने उज्बेकों से सीखी।
- बाबर तोपों को सजाने के लिए उस्मानी विधि (रुमी विधि) का प्रयोग करता था।
- बाबर के तोपचियों का नाम- उस्ताद अली, मुस्तफा खाँ।
- बाबर के आक्रम के समय भारत का शासक इब्राहिम लोदी था।

बाबर के भारत पर आक्रमण

- बाबर ने भारत पर प्रथम आक्रमण यूसूफजाई जाति के विरुद्ध किया **(1519)**। इस अभियान में बाबर ने बाजौर और भेरा के किले को अपने अधिकार में ले लिया। **1520** ई. में बाबर ने बाजौर और भेरा को पुनः जीता तथा स्यालकोट एवं सैय्यदपुर को भी अपने अधिकार में कर लिया।

- **1524** ई. में बाबर के पेशावर अभियान के समय दौलत खाँ लोदी ने अपने पुत्र दिलावर खाँ लोदी द्वारा भारत पर आक्रमण करने के लिए बाबर को निमंत्रण भेजा। दौलत खाँ लोदी उस समय पंजाब का गर्वनर था। यह इब्राहिम लोदी का चाचा था। कुछ इतिहासकार यह कहते हैं, राणा सांगा ने भी बाबर को भारत पर आक्रमण करने के लिए निमंत्रण भेजा था।

पानीपत का प्रथम युद्ध (1526 ई.)

- यह युद्ध दिल्ली के सुल्तान इब्राहिम लोदी और बाबर के मध्य लड़ा गया। इस युद्ध में इब्राहिम लोदी मारा गया। इब्राहिम लोदी मध्यकालीन भारत का एकमात्र सुल्तान था। जो युद्ध भूमि में ही मारा गया। इसके मरने के साथ ही दिल्ली सल्तनत का अंत हो गया और मुगल काल की शुरुआत हुई।
- पानीपत के युद्ध को जीतने का श्रेय बाबर ने अपने धनुधारियों को दिया है। इस युद्ध को जीतने के बाद बाबर ने प्रत्येक काबुल निवास को एक-एक चांदी का सिक्का उपहार स्वरुप दिया। बहुत सारी सम्पत्ति अपने सैनिकों के बीच में बाँट दी। उसकी इसी उदारता के कारण को कलंदर की उपाधि दी गई।

- इस युद्ध में बाबर ने पहली बार 'तुलगमा युद्ध पद्धति' का प्रयोग किया। इस युद्ध में बाबर ने तोपों को सजाने में 'उस्मानी पद्धति' का प्रयोग किया। इस पद्धति में दो गाड़ियों के बीच में पर्याप्त जगह छोड़कर तोप को रखकर चलाया जाता है।
- इस युद्ध के बाद बाबर ने दिल्ली और आगरा पर कब्जा कर लिया।

बयाना (भरतपुर) का युद्ध 16 फरवरी, 1527

- इस युद्ध बाबर के सेनापति मेंहदी हसन ने बयाना पर अधिकार कर लिया लेकिन राणा सांगा ने इस युद्ध में मेंहदी हसन को मार दिया।